Aqwaale Siddiqe Akbar (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 231
Weekly Booklet : 231

अक़्वाले सिद्दीक़े अकबर رَضِیَ اللہُ عَنْہُ

सफ़हात 20

मैं उन्हीं में से हूं	02
ख़ौफ़े ख़ुदा की अ़ज़ीम मिसाल	07
सलमान फ़ारसी को नसीहत	13
सिद्दीक़े अकबर से मन्क़ूल दुआएं	16

पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े ख़ोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला	: **अक़्वाले सिद्दीक़े अक्बर** رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ
पहली बार	: जुमादल आख़िर **1443** हि., जनवरी **2022** ई.
ता'दाद	: 000
नाशिर	: **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "**अक़्वाले सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ**"

मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअए मक्तूब, Email या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबिता : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद-1, गुजरात

MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ हसरत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा हसरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म हासिल करने का मौक़अ मिला मगर उस ने हासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म हासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अमल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج۵۱ص۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की तबाअत में नुमायां ख़राबी हो या सफ़हात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ फ़रमाइये।

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الۡمُرۡسَلِیۡنَ ط
اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ ط بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ط

अक़्वाले सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ

दुआए अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 18 सफ़्हात का रिसाला "**अक़्वाले सिद्दीक़े अक्बर**" पढ़ या सुन ले, उसे और उस की नस्लों को सह़ाबा व अहले बैत की सच्ची ग़ुलामी नसीब फ़रमा और इ़श्क़े रसूल की ला ज़वाल दौलत से मालामाल फ़रमा कर बे ह़िसाब बख़्श दे ।

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते अह़मद बिन साबित رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ने से मुतअ़ल्लिक़ मैं ने जो कुछ देखा उन में से एक येह भी है कि मैं ने ख़्वाब के अन्दर जंगल में एक मिम्बर देखा, जब मैं उस की सीढ़ियों पर चढ़ गया तो मैं ने ज़मीन की त़रफ़ नज़र की तो क्या देखता हूं कि ज़मीन से दूर हवा में एक मिम्बर है, मैं कई दरजे (Steps) ऊपर चढ़ गया, जब मुड़ कर देखा तो सिर्फ़ वोह दरजा (Step) नज़र आया जिस पर मेरे पाउं थे बाक़ी कुछ नज़र न आया, मैं ने दुरूदो सलाम का वासित़ा दे कर **अल्लाह** पाक की बारगाह में दुआ़ की : **या अल्लाह** पाक ! मुझे सलामती की राह चला । इतने में पुल सिरात़ की मानन्द एक काला धागा दिखाई दिया, मैं ने दिल में सोचा कि हो न हो येह पुल सिरात़ है जिस ने मुझे आ घेरा है, मेरे पास **अल्लाह** पाक के फ़ज़्लो

करम और रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदो सलाम के सिवा कोई अ़मल ऐसा नहीं था जो इस दुश्वार गुज़ार मन्ज़िल को पार करने में काम आए। इतने में हातिफ़े ग़ैबी से (या'नी ग़ैब से पुकारने वाले की) येह आवाज़ सुनाई दी कि अगर तुम इस मन्ज़िल को पार कर लो तो उस पार रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और आप के सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से मुलाक़ात की ने'मत पाओगे। येह सुन कर मैं बहुत ख़ुश हुवा और मैं ने **अल्लाह** पाक की जनाब में दुरूदो सलाम का वसीला पेश किया तो अचानक मुझे एक नूरानी बादल ने उठा कर रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़दमों में ला डाला, क्या देखता हूं कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ फ़रमा हैं और आप की सीधी जानिब ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ, बाईं (Left) त़रफ़ ह़ज़रते फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ, पीछे ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ मौजूद हैं और ह़ज़रते मौला अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ भी सामने खड़े हैं। मैं ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! आप मेरे ज़ामिन (या'नी ज़िम्मेदार) हो जाइये, तो फ़रमाया : "मैं तुम्हारा ज़ामिन हूं और तुम्हारा ख़ातिमा बिलख़ैर होगा (या'नी अच्छी ह़ालत पर वफ़ात होगी)।" फिर मैं ने दुआ़ की दरख़्वास्त की तो आप ने इर्शाद फ़रमाया : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ना लाज़िम कर लो और फ़ुज़ूलिय्यात से अलग रहो। (سعادۃ الدارین ص125)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

मैं उन्हीं में से हूं

मुसल्मानों के चौथे ख़लीफ़ा ह़ज़रते मौला अ़ली शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने सूरतुल अम्बियाअ की आयत नम्बर 101 तिलावत फ़रमाई : ﴿اِنَّ الَّذِیْنَ سَبَقَتْ لَهُمْ مِّنَّا الْحُسْنٰۙ اُولٰٓىٕكَ عَنْهَا مُبْعَدُوْنَۙ﴾ **तरजमए कन्ज़ुल**

ईमान : ''बेशक वोह जिन के लिये हमारा वा'दा भलाई का हो चुका वोह जहन्नम से दूर रखे गए हैं।'' फिर इर्शाद फ़रमाया : मैं उन्हीं में से हूं, (ह़ज़राते) अबू बक्र, उ़मर, उ़स्मान, और त़ल्ह़ा, जुबैर, सा'द, सईद, अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़, अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ (भी) उन्हीं में से हैं। (تفسیر بیضاوی، 110/4)

इस पे गवाह هُوَ الَّذِیْ शीशए ह़क़नुमा नबी देख लो जल्वए नबी शीशए चार यार में

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

ऐ आ़शिक़ाने सह़ाबा व अहले बैत ! मौला अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के फ़रमान पर हमारी जान क़ुरबान ! आप ने कितने प्यारे अन्दाज़ में क़ुरआनी आयत से ख़ुलफ़ाए राशिदीन व अ़शरए मुबश्शरा सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के बारे में अपने ह़सीन जज़्बात व ख़यालात का इज़्हार फ़रमाया। किस क़दर बद नसीब है वोह शख़्स जो مَعَاذَاللّٰہ सह़ाबए किराम, ख़ुलफ़ाए राशिदीन ख़ुसूसन शैख़ैने करीमैन या'नी ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ और ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا की शाने बे ऐ़ब निशान में बुरी बात ज़बान पर लाए या अपने नापाक दिमाग़ में इसे जगह दे। ऐसे बद नसीब को फ़ौरन से पेश्तर अपनी इस बुरी सोच से तौबा कर के तमाम सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के बारे में अपने दिलो दिमाग़ को पाको साफ़ कर लेना चाहिये वरना कहीं ऐसा न हो कि वोह दुन्या में इ़ब्रत का निशान बन जाए और आख़िरत का होलनाक अ़ज़ाब हमेशा के लिये उस का मुक़द्दर हो जाए। ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ और ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا की ज़ाते बा बरकात तो वोह अ़ज़मतो शान वाली हैं जो ज़ाहिरी इन्तिक़ाल शरीफ़ तक रह़मत वाले आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ साथ रहे, अब भी मज़ार शरीफ़ में साथ ही दफ़्न हैं और क़ियामत में इस शान से अपनी क़ब्र

शरीफ़ से बाहर तशरीफ़ लाएंगे कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ साथ होंगे। اِنْ شَآءَ اللّٰہُ الْکَرِیْم हम ग़ुलामाने सिद्दीक़े अक्बर ब फ़ैज़ाने मौला अ़ली मुश्किल कुशा इन के पीछे पीछे जन्नत में बिला ह़िसाब दाख़िल हो जाएंगे।

अ़ली हैं उस के दुश्मन और वोह दुश्मन अ़ली का है
जो दुश्मन अ़क़्ल का दुश्मन हुवा सिद्दीक़े अक्बर का

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

उ़र्स शरीफ़

मुसल्मानों के पहले ख़लीफ़ा, ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का यौमे उ़र्स 22 जुमादल उख़्रा है। (تاریخ الخلفاء، ص62) **अल्लाह** करीम की आप पर करोड़ों रह़मतें नाज़िल हों, आप वोह अ़ज़ीम सह़ाबिये रसूल हैं जिन की शान में क़ुरआने करीम की आयात नाज़िल हुईं, साह़िबे क़ुरआन, नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बल्कि **अल्लाहुर्रह़मान** ने भी आप को अपनी रिज़ा की ख़ुश ख़बरी इनायत फ़रमाई है।

मुसल्मानों के चौथे ख़लीफ़ा ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं: आ'माल नामों में नेकियों के लिह़ाज़ से अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ सब से बढ़ कर हैं, **अल्लाह** पाक इन पर रह़मतों की बारिश करे कि मुसल्मानों को क़ुरआन जम्अ़ कर के दे गए। (مرقاۃ المفاتیح، 4/729، تحت الحدیث:2220)

आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के उ़र्स शरीफ़ के मुबारक दिनों की बरकात लेने के लिये आप के मुख़्तलिफ़ फ़रामीन व दुआ़एं ज़िक्र की जा रही हैं। आ़शिक़ाने सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ अपने आक़ा, यारे ग़ार व यारे मज़ार رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की सीरत को अपनाने की कोशिश फ़रमाएं और ईसाले सवाब के लिये ख़ूब इस रिसाले को आ़म फ़रमाएं। सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की मुबारक सीरत

पढ़ने के लिये मक्तबतुल मदीना के येह 2 रसाइल ''आ़शिक़े अक्बर'' और ''शाने सिद्दीक़े अक्बर'' पढ़िये। येह रसाइल दा'वते इस्लामी की वेबसाइट से फ़्री डाउन लोड भी कर सकते हैं।

हर सह़ाबिये नबी..... जन्नती जन्नती
सब सह़ाबियात भी..... जन्नती जन्नती
ह़ज़रते सिद्दीक़ भी..... जन्नती जन्नती
और उ़मर फ़ारूक़ भी..... जन्नती जन्नती
उ़स्माने ग़नी..... जन्नती जन्नती
फ़ातिमा और अ़ली..... जन्नती जन्नती
हैं ह़सन हुसैन भी..... जन्नती जन्नती
हैं मुआ़विया भी..... जन्नती जन्नती
और अबू सुफ़्यान भी..... जन्नती जन्नती
वालिदैने नबी..... जन्नती जन्नती
हर ज़ौजए नबी..... जन्नती जन्नती

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

इर्शादाते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ

❀ सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया : नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ना गुनाहों को इस क़दर जल्द मिटाता है कि पानी भी आग को उतनी जल्दी नहीं बुझाता और नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर सलाम भेजना ग़ुलामों को आज़ाद करने से अफ़्ज़ल है।

(تاریخ بغداد، 7/172، رقم:3607)

❀ **अल्लाह** पाक ने जो तुम्हें निकाह़ का हुक्म फ़रमाया, तुम उस की

इताअ़त करो उस ने जो ग़नी करने का वा'दा किया है पूरा फ़रमाएगा। **अल्लाह** पाक ने फ़रमाया : "अगर वोह फ़क़ीर होंगे तो **अल्लाह** पाक उन्हें अपने फ़ज़्ल से ग़नी कर देगा।" (تفسیر ابن ابی حاتم، النور، تحت الآیۃ:32، 8/2582)

नसीह़त आमोज़ कलिमात

❀ ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ अपने ख़ुत्बे में इर्शाद फ़रमाते थे : "कहां गए वोह लोग जिन के चेहरे ख़ूब सूरत थे और चमकते थे और वोह अपनी जवानियों पर फ़ख़्र करते थे ? कहां हैं वोह बादशाह जिन्हों ने शह्र ता'मीर किये और उन के गिर्द दीवारें बना कर उन को मह़फ़ूज़ किया ? कहां हैं वोह जो लड़ाई के मैदान में ग़ालिब आते थे ? ज़माने ने उन्हें कमज़ोर और ज़लील कर दिया और वोह क़ब्रों की तारीकियों में चले गए, जल्दी जल्दी करो और नजात तलाश करो, नजात तलाश करो।" (احیاء العلوم، 5/201)

❀ ऐ लोगो ! झूट से बचो, क्यूं कि झूट ईमान के मुख़ालिफ़ है।

(مسند امام احمد، 1/22، حدیث:16)

❀ जिस से हो सके वोह रोए और जिसे रोना न आए तो वोह रोने जैसी सूरत ही बना ले। (احیاء العلوم، 4/201)

❀ ऐ लोगो ! ख़ौफ़े ख़ुदा से तुम में से जो रो सके वोह रोए कि वोह दिन आने वाला है कि तुम रुलाए जाओगे। (تاریخ الخلفاء، ص81)

किसी मुसल्मान को ह़क़ीर मत समझो

❀ किसी मुसल्मान को हरगिज़ ह़क़ीर मत समझो क्यूं कि अदना मुसल्मान भी **अल्लाह** पाक के नज़्दीक बड़े मर्तबे वाला होता है। (الزواجر، 1/149)

❀ मैं तुम्हें वसिय्यत करता हूं कि फ़क़्रो फ़ाक़ा की ह़ालत में भी **अल्लाह** पाक से डरते रहो और उस की इस त़रह़ ह़म्दो सना करो जिस त़रह़ करने

का ह़क़ है और अपने गुनाहों की बख़्शिश मांगते रहो बेशक वोह बहुत ज़ियादा बख़्शने वाला है। (حلیۃ الاولیاء، 1/70، رقم:81)

कसरत से दुआ़ किया करो

❀ **अल्लाह** पाक की बारगाह में ख़ौफ़ और उम्मीद के साथ कसरत से दुआ़ किया करो क्यूं कि **अल्लाह** पाक ने ह़ज़रते ज़करिय्या عَلَیْہِ السَّلَام और उन के घर वालों की ता'रीफ़ करते हुए फ़रमाया :

اِنَّهُمْ كَانُوْا يُسٰرِعُوْنَ فِي الْخَيْرٰتِ وَ يَدْعُوْنَنَا رَغَبًا وَّ رَهَبًا ؕ وَ كَانُوْا لَنَا خٰشِعِيْنَ ۝ (پ17، الانبیاء:90)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक वोह भले कामों में जल्दी करते थे और हमें पुकारते थे उम्मीद और ख़ौफ़ से और हमारे हुज़ूर गिड़गिड़ाते हैं।

(حلیۃ الاولیاء، 1/69، رقم:80)

❀ **अल्लाह** पाक के बन्दो ! जान लो बेशक **अल्लाह** पाक ने अपने ह़क़ के बदले में तुम्हारी जानों को गिरवी (या'नी रहन) रखा है और इस पर तुम से पक्का वा'दा लिया है और तुम से थोड़ी और जल्द ख़त्म हो जाने वाली ज़िन्दगी को हमेशा बाक़ी रहने वाली ज़िन्दगी के बदले में ख़रीद लिया है और तुम्हारे पास **अल्लाह** पाक की किताब (या'नी क़ुरआने करीम) है जिस के अ़जाइबात कभी ख़त्म नहीं हो सकते और न ही इस का नूर बुझाया जा सकता है। इस की आयात की तस्दीक़ करो और इस से नसीह़त ह़ासिल करो, नीज़ तारीकी वाले दिन के लिये इस से रोशनी ह़ासिल करो बेशक **अल्लाह** पाक ने तुम्हें इ़बादत के लिये पैदा फ़रमाया और तुम पर किरामन कातिबीन (या'नी आ'माल लिखने वाले फ़िरिश्तों) को मुक़र्रर फ़रमाया है और जो तुम करते हो वोह उसे जानते हैं। (حلیۃ الاولیاء، 1/69، رقم:80)

उन जैसे न बन जाना

❀ **अल्लाह** पाक के बन्दो ! जान लो तुम एक मुक़र्ररा वक़्त (या'नी मौत आने) तक सुब्हो शाम कर रहे हो जिस का इल्म तुम्हें नहीं दिया गया है। अगर तुम अपनी ज़िन्दगी रिज़ाए रब्बुल अनाम वाले कामों में गुज़ार सको तो ऐसा ही करो मगर येह **अल्लाह** पाक की तौफ़ीक़ के बिग़ैर मुम्किन नहीं लिहाज़ा अपनी ज़िन्दगी की मोहलत से फ़ाएदा उठाओ और एक दूसरे पर आ'माल में सब्क़त ले जाओ इस से पहले कि मौत आए और तुम्हें तुम्हारे बुरे आ'माल की त़रफ़ लौटा दे। क्यूं कि बहुत सी क़ौमों ने अपनी उ़म्रें ग़ैरों के लिये गुज़ार दीं और अपने आप को भूल गए। इस लिये मैं तुम्हें रोकता हूं कि तुम उन जैसे न बन जाना। जल्दी करो जल्दी ! नजात ह़ासिल करो नजात ! बेशक मौत तुम्हारा पीछा कर रही है और वोह बहुत जल्द आने वाली है। (مصنف ابن ابی شیبۃ، 8/144، حدیث:1)

❀ हम ने इ़ज़्ज़त को तक़्वा में, मालदारी को यक़ीन में और बुज़ुर्गी को आ़जिज़ी में पाया। (احیاء العلوم، 3/421)

ख़ौफ़े ख़ुदा की अ़ज़ीम मिसाल

❀ मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने एक दिन परिन्दे को देख कर इर्शाद फ़रमाया : ऐ परिन्दे ! काश मैं तेरी त़रह़ होता और मुझे इन्सान न बनाया जाता। (شعب الایمان، 1/485، حدیث:788، احیاء العلوم، 4/226)

काश ! कि मैं दुन्या में पैदा न हुवा होता क़ब्रो ह़श्र का हर ग़म ख़त्म हो गया होता

मह़ब्बते इलाही का मज़ा

❀ जो शख़्स ख़ालिस मह़ब्बते इलाही का मज़ा चख लेता है तो येह उस को दुन्या की त़लब से दूर कर देता है और उस को तमाम इन्सानों से वह़शत दिलाता है। (تفسیر روح البیان، 8/388، تحت الآیۃ:67)

कभी पेट भर कर नहीं खाया

❀ मैं जब से मुसल्मान हुवा हूं कभी पेट भर कर नहीं खाया ताकि इबादत की ह़लावत नसीब हो और जब से इस्लाम क़बूल किया है **अल्लाह** पाक की मुलाक़ात के शौक़ के सबब कभी सेर हो कर नहीं पिया।

(मुख़्तसर मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 87)

नमाज़ की तरग़ीब

❀ सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ नमाज़ के वक़्त फ़रमाते : लोगो उठो ! अपने रब की जिस आग को तुम ने भड़काया है उसे (नमाज़ के ज़रीए) बुझाओ।

(مکاشفۃ القلوب، ص68)

जहन्नम से महफ़ूज़ रहने का अ़मल

❀ अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते थे : "जिसे येह पसन्द हो कि **अल्लाह** पाक बरोज़े क़ियामत उसे जहन्नम की आग से महफ़ूज़ रखे तो उसे चाहिये कि मोमिन के लिये मेहरबान और नर्मदिल हो।"

(تنبیہ المغترین، ص76)

मुंह में पथ्थर रखते थे

❀ अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ अपने मुंह में पथ्थर रखते थे और कई साल तक आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ऐसा करते रहे यहां तक कि कम गुफ़्तगू करने की आ़दत बन गई, आप सिर्फ़ खाने और नमाज़ के वक़्त पथ्थर मुंह से निकालते थे और येह सिर्फ़ इस डर से था कि कहीं ज़बान से फ़ुज़ूल कलिमा न निकल जाए, जब आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो अपनी ज़बान निकाल कर फ़रमाया : येह वोह है जो मुझे हलाकत के मक़ाम पर ले जाती थी (आप ने बतौ़रे आ़जिज़ी ऐसा फ़रमाया)।"

(تنبیہ المغترین، ص190)

❀ ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ (आ़जिज़ी के त़ौर पर) फ़रमाते हैं : काश मैं (फ़ुज़ूल बात कहने से) गूंगा होता। (मिरआतुल मनाजीह़, 8/18)

❀ ऐ लोगो ! **अल्लाह** पाक से मुआ़फ़ी व आ़फ़ियत त़लब करो क्यूं कि मोमिन के लिये इस्लाम के बा'द मग़्फ़िरतो आ़फ़ियत से बढ़ कर कोई अफ़्ज़ल चीज़ नहीं। (تنبیہ المغترین، ص45)

❀ किसी ने सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से पूछा : आप ने सुब्ह़ कैसे की ? फ़रमाया : रब्बे जलील की बारगाह में ह़क़ीर बन्दे की त़रह़ जो उस के अह़काम की पैरवी का पाबन्द है। (تنبیہ المغترین، ص153)

ख़ुद पसन्दी से दूर रहते

❀ अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ तकब्बुर और ख़ुद पसन्दी से बहुत ज़ियादा डरते थे जब लोग आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की ता'रीफ़ करते तो आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ यूं दुआ मांगते : **या अल्लाह** पाक ! जो कुछ येह कहते हैं मुझे इस से बेहतर बना दे और जो कुछ येह नहीं जानते मेरा वोह अ़मल मुआ़फ़ फ़रमा दे। (تنبیہ المغترین، ص241)

आंखें अश्कबार हो जातीं

❀ आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ जब क़ुरआने पाक की तिलावत फ़रमाते तो आप को अपने आंसूओं पर इख़्तियार न रहता (या'नी ज़ारो क़ित़ार रोया करते)।

(شعب الایمان، 1/493، رقم:806)

❀ हुरूफ़े मुक़त्त़आ़त के बारे में फ़रमाया : हर किताब के राज़ होते हैं और क़ुरआने मजीद के राज़ सूरतों के शुरूअ़ में आने वाले हुरूफ़ हैं।

(تفسیر روح المعانی، پ1، البقرۃ، تحت الآیۃ:1، 1/136)

❀ ऐ लोगो ! भलाई का हुक्म दो, बुराई से मन्अ़ करो तुम्हारी ज़िन्दगी बख़ैर गुज़रेगी। (تفسیر کبیر 3/316)

सिद्दीक़े अक्बर की आ़जिज़ी

❀ एक शख़्स ने अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को बुरा भला कहा तो आप ने (अपने नफ़्स को मुख़ात़ब करते हुए) फ़रमाया : **अल्लाह** पाक ने तेरे जो उ़यूब छुपा रखे हैं वोह इस से ज़ियादा हैं। गोया उस वक़्त आप अपने नफ़्स को इस निगाह से देख रहे थे कि वोह **अल्लाह** पाक की मा'रिफ़त और उस से कमा ह़क़्क़ुहू डरने में कोताही कर रहा है, लिहाज़ा आप उस की बात पर ग़ुस्सा न हुए क्यूं कि आप अपने नफ़्स में ही कमी ख़याल फ़रमा रहे थे। येह आप की अ़ज़मतो शान थी। (احیاء العلوم، 1/212)

अल्लाह से ह़या करो

❀ ऐ लोगो ! **अल्लाह** पाक से ह़या करो, उस ज़ात की क़सम ! जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! जब मैं खुले मैदान में क़ज़ाए ह़ाजत के लिये जाता हूं तो साया ह़ासिल करता हूं और **अल्लाह** पाक से ह़या करते हुए अपना सर ढांप लेता हूं। (مصنف ابن ابی شیبہ، 2/44، حدیث:1133)

❀ ऐ लोगो ! **अल्लाह** पाक से शर्म किया करो, ख़ुदा की क़सम ! जब मैं बैतुल ख़ला जाता हूं तो **अल्लाह** पाक से शर्म के बाइ़स दीवार से अपनी पीठ लगा लेता हूं। (تاریخ الخلفاء، ص75)

ता'ज़ियत का ख़ूब सूरत अन्दाज़

❀ जब सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ किसी से ता'ज़ियत करते तो फ़रमाते : सब्र करने में कोई मुसीबत नहीं और रोने धोने का कोई फ़ाएदा नहीं है, सुनो ! मौत अपने मा बा'द से आसान और मा क़ब्ल से ज़ियादा सख़्त है, तुम हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वफ़ाते ज़ाहिरी को याद करोगे तो तुम्हें अपनी

मुसीबत कम मा'लूम होगी और **अल्लाह** पाक तुम्हें ज़ियादा अज्र अ़ता फ़रमाएगा। (ابن عساکر، 30/336)

❀ हमारा दरवाज़ा बन्द कर दो ताकि हम सुब्ह़ तक इ़बादत में मश्ग़ूल रहें। (تاریخ الخلفاء، ص75)

❀ नेक लोग दुन्या से एक एक कर के उठा लिये जाएंगे सिर्फ़ वोह लोग बाक़ी रह जाएंगे जो इस त़रह़ बेकार होंगे जैसे जव और खजूर का छिलका और उन से **अल्लाह** पाक को कोई तअ़ल्लुक़ नहीं होगा। (تاریخ الخلفاء، ص81)

हर मुसीबत पर अज्र दिया जाता है

❀ बिला शुबा मुसल्मानों को हर चीज़ पर अज्र दिया जाता है ह़त्ता कि छोटी सी मुसीबत और तस्मे के टूटने पर भी नीज़ उस माल पर भी जो उस की आस्तीन में पड़ा हुवा हो लेकिन वोह मुसल्मान उसे ढूंडता फिरे और उसे उस माल के गुम होने का अन्देशा हो फिर उसे ज़ेह्न पर ज़ोर दे कर ह़ासिल करे। (الزہد للامام احمد، ص139، رقم:565)

बुराई से न रोकने का वबाल

❀ जब कोई क़ौम अपने से ज़ियादा इ़ज़्ज़त दार लोगों में ना फ़रमानी करे और वोह (इ़ज़्ज़त दार लोग) उन को उस ना फ़रमानी से न रोकें तो **अल्लाह** पाक उन पर ऐसी मुसीबत नाज़िल फ़रमाएगा जो उन से दूर न होगी। (شعب الایمان، 6/82، حدیث:7551)

❀ ऐ लोगो ! तुम इस आयत :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلَيْكُمْ اَنْفُسَكُمْۚ لَا يَضُرُّكُمْ مَّنْ ضَلَّ اِذَا اهْتَدَيْتُمْؕ

(پ7، المائدہ:105)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! तुम अपनी फ़िक्र रखो तुम्हारा कुछ न बिगाड़ेगा जो गुमराह हुवा जब कि तुम राह पर हो।

को पढ़ते हो और इस को ग़लत़ मा'ना में लेते हो जब कि हम ने **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना है कि जब लोग ज़ालिम को देखें और उस का हाथ न रोकें तो क़रीब है कि **अल्लाह** उन सब पर अ़ज़ाब करे। (مسند امام احمد 1/15، حدیث:1)

❀ जब क़ियामत का दिन होगा तो एक ए'लान करने वाला ए'लान करेगा कि कहां हैं लोगों को मुआ़फ़ करने वाले ? **अल्लाह** पाक उन को मुआ़फ़ करने का अज्र अ़त़ा फ़रमाएगा। (جامع الاحادیث، 14/182، حدیث:219)

सुब्ह़ो शाम अल्लाह के ज़िम्मए करम पर

❀ ह़ज़रते सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! मुझे कुछ वसिय्यत फ़रमाइये। आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने इर्शाद फ़रमाया: ऐ सलमान ! **अल्लाह** से डरो और जान लो अ़न्क़रीब तुम्हें फ़ुतूह़ात ह़ासिल होंगी, अलबत्ता मैं येह नहीं जानता कि उस से जो तुम्हें ह़िस्सा मिलेगा तुम उसे अपने काम में लाओगे या ज़ाएअ़ कर दोगे ? लेकिन एक बात हमेशा याद रखना कि जिस ने पन्जगाना नमाज़ें अदा कीं वोह सुब्ह़ो शाम **अल्लाह** के ज़िम्मए करम पर होता है और जो **अल्लाह** के ज़िम्मए करम पर हैं उन में से किसी को क़त्ल न करना, कहीं ऐसा न हो कि तुम **अल्लाह** पाक के ज़िम्मे को नोच डालो फिर **अल्लाह** पाक तुम्हें जहन्नम में औंधे मुंह डाल दे। (تاریخ الخلفاء، ص81)

सलमान फ़ारसी को नसीह़त

❀ ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने ह़ज़रते सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को वसिय्यत करते हुए इर्शाद फ़रमाया : यक़ीनन **अल्लाह** पाक ने तुम्हारे

लिये दुन्या को फैला दिया है तो तुम इस में से ब क़दरे ज़रूरत ही हिस्सा लेना। (दुन्या से बे रग़बती और उम्मीदों की कमी, स. 72)

उम्मीद व ख़ौफ़ की आ'ला मिसाल

❀अगर आस्मान से कोई बा आवाज़े बुलन्द सदा दे कि जन्नत में सिर्फ़ एक आदमी दाख़िल होगा तो मुझे उम्मीद है कि वोह मैं ही होउंगा और अगर आस्मान से येह आवाज़ आए कि दोज़ख़ में सिर्फ़ एक ही शख़्स दाख़िल होगा तो मुझे ख़ौफ़ है कि कहीं वोह भी मैं ही न होउं। (اللمع فی التصوف، ص168)

❀ बहुत ख़ुश क़िस्मत है वोह शख़्स जो इब्तिदाए इस्लाम में (या'नी फ़ितनों के सर उठाने से पहले) दुन्या से चला गया। (مسند الفردوس، 2/46، حدیث:3747)

पड़ोसी से झगड़ा मत करो

❀ एक बार ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ अपने बेटे ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के पास से गुज़रे तो वोह अपने पड़ोसी को डांट रहे थे आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने उन से फ़रमाया : अपने पड़ोसी के साथ झगड़ा मत करो क्यूं कि येह तो यहीं रहेगा लेकिन जो लोग तुम्हारी लड़ाई को देखेंगे वोह यहां से चले जाएंगे (और मुख़्तलिफ़ क़िस्म की बातें बनाएंगे)। (تاریخ الخلفاء، ص79)

❀ कोई शिकार उस वक़्त तक शिकार नहीं किया जाता और न ही कोई दरख़्त उस वक़्त तक काटा जाता है जब तक कि ज़िक्रुल्लाह से ग़ाफ़िल न हो जाए। (مصنف ابن ابی شیبۃ، 8/137، حدیث:35582، الزہد للامام احمد، ص139، حدیث:567)

❀ एक भाई की दुआ़ दूसरे भाई के ह़क़ में जो **अल्लाह** पाक की रिज़ा की ख़ातिर की जाए क़बूल हो जाती है। (الزہد للامام احمد، ص140، رقم:574)

❀ ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ येह शे'र बत़ौरे नसीह़त पढ़ा करते थे :

لَا تَزَالُ تَنْعِي حَبِيْباً حَتّٰى تَكُوْنَه وَقَدْ يَرْجُو الْفَتٰى الرِّجَا يَمُوْتُ دُوْنَه

या'नी ऐ ग़ाफ़िल नौ जवान ! तू अपने दोस्तों के मरने की ख़बर तो देता रहता है क्या कभी सोचा कि एक दिन तू भी उन की त़रह़ बेजान हो जाएगा क्यूं कि बसा अवक़ात कोई नौ जवान उम्मीदें पूरी होने से पहले ही सफ़रे आख़िरत पर रवाना हो जाता है। (الزہد للامام احمد، ص142، رقم:591، تاریخ الخلفاء، ص82)

❀ उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! अगर तुम तक़्वा व परहेज़ गारी इख़्तियार करो तो कोई बईद नहीं कि तुम पर आसानियों के दरवाज़े खोल दिये जाएं ह़त्ता कि तुम रोटी और घी से सैराब हो जाओ। (المجالسۃ وجواہر العلم، 1/409، رقم:1057)

ज़मीन पर रह़मते इलाही का साया

❀ एक दफ़्आ ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने मिम्बर पर ख़ुत्बा देते हुए इर्शाद फ़रमाया कि मैं ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना : "अद्लो इन्साफ़ और आजिज़ी करने वाला बादशाह ज़मीन पर **अल्लाह** पाक (की रह़मत) का साया और उस का नेज़ा है पस जिस ने बादशाह को अपने और **अल्लाह** पाक के बन्दों के मुतअ़ल्लिक़ नसीह़त की (या'नी फ़ाएदे मन्द बात बताई) **अल्लाह** पाक उस का ह़श्र अपने सायए रह़मत में फ़रमाएगा जिस दिन उस के सायए रह़मत के इलावा कोई साया न होगा और जिस ने बादशाह को अपने और **अल्लाह** पाक के बन्दों के बारे में धोका दिया **अल्लाह** पाक उस को क़ियामत के दिन रुस्वा करेगा।"

(فضیلۃ العادلین لابی نعیم اصبہانی، ص124، حدیث:18)

शराब का वबाल

❀ किसी ने सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से पूछा : क्या आप ने दौरे जाहिलिय्यत में शराब पी थी ? तो आप ने फ़रमाया : **अल्लाह** की पनाह ! मैं हमेशा

अपनी इ़ज़्ज़त और इन्सानिय्यत की हिफ़ाज़त करता था जब कि शराब पीने वाले की इ़ज़्ज़त और इन्सानिय्यत दोनों ज़ाएअ़ हो जाती हैं। (تاریخ ابن عساکر، 30/333)

सिद्दीक़े अक्बर से मन्क़ूल दुआएं

सुब्ह़ो शाम मांगी जाने वाली दुआ

❀ तमाम मुसल्मानों की अम्मीजान ह़ज़रते बीबी आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا फ़रमाती हैं : मेरे वालिदे मोह़तरम ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ सुब्ह़ो शाम एक दुआ़ मांगा करते थे (वोह दुआ़ येह है) : ''اَللّٰھُمَّ اجْعَلْ خَیْرَ عُمُرِیْ اٰخِرَہٗ وَخَیْرَ عَمَلِیْ خَوَاتِمَہٗ وَخَیْرَ اَیَّامِیْ یَوْمَ اَلْقَاکَ'' या'नी ऐ **अल्लाह** पाक ! मेरी आख़िरी उ़म्र बेहतर हो, मेरे आ'माल का ख़ातिमा ख़ैर पर हो और मेरे दिनों में सब से बेहतर दिन वोह हो जिस दिन मुझे तेरा दीदार मुयस्सर हो।'' अ़र्ज़ की गई : ''ऐ अबू बक्र ! आप को येह दुआ़ मांगने की क्या ज़रूरत है ? आप तो सह़ाबिये रसूल हैं, ثَانِیَ اثْنَیْنِ فِی الْغَار हैं।'' फ़रमाया : ''बा'ज़ अवक़ात ऐसा होता है कि कोई पूरी ज़िन्दगी जन्नतियों वाले आ'माल करता रहता है लेकिन उस का ख़ातिमा जहन्नमियों वाले अ़मल पर हो जाता है, और ऐसा भी होता है कि कोई पूरी ज़िन्दगी जहन्नमियों वाले आ'माल करता रहता है लेकिन उस का ख़ातिमा जन्नतियों वाले अ़मल पर हो जाता है।'' (या'नी हमेशा **अल्लाह** पाक की ख़ुफ़्या तदबीर से डरते रहो) (کنز العمال، 1/176، حدیث:1537)

जनाज़ा पढ़ाने के बा'द दुआ़

❀ मुसल्मानों के पहले ख़लीफ़ा ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ जब किसी मय्यित का जनाज़ा पढ़ा लेते तो यूं दुआ़ फ़रमाते :

اَللّٰھُمَّ عَبْدُكَ اَسْلَمَهُ الْاَھْلُ وَالْمَالُ وَالْعَشِیْرَةُ وَالذَّنْبُ عَظِیْمٌ وَّاَنْتَ الْغَفُوْرُ الرَّحِیْمُ'' या'नी ऐ **अल्लाह** पाक ! तेरे इस बन्दे को इस के अहलो इ़याल, मालो मताअ़ और दीगर रिश्तेदारों ने बे यारो मददगार छोड़ दिया है इस के गुनाह बहुत ज़ियादा हैं लेकिन तू ग़फ़ूरुर्रहीम है (इस के तमाम गुनाहों को बख़्श दे) ।''

(مصنف ابن ابی شیبۃ، 7/242، حدیث:11472)

जन्नातुन्नईम के आ'ला दरजात

❀ ह़ज़रते ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ अपनी दुआ में येह अ़र्ज़ करते थे : ''اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْاَلُكَ الَّذِیْ هُوَ خَیْرٌ فِیْ عَاقِبَةِ اَمْرِیْ اَللّٰھُمَّ اجْعَلْ مَا تُعْطِیْنِی الْخَیْرَ رِضْوَانَكَ وَالدَّرَجَاتِ الْعُلٰی فِیْ جَنَّاتِ النَّعِیْمِ या'नी ऐ **अल्लाह** पाक ! मैं तुझ से उसी शै का सुवाल करता हूं जो मेरी आ़क़िबत के लिये अच्छी हो । ऐ **अल्लाह** पाक ! तू जो भलाई भी मुझे अ़त़ा फ़रमाए उस का अन्जाम अपनी ख़ुशनूदी और जन्नातुन्नईम के आ'ला दरजात बना दे ।''

(الزہد للامام احمد، ص141، رقم:584)

अश्या में तमामे ने'मत का सुवाल

❀ ह़ज़रते अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अबू सलमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ यूं दुआ किया करते थे :

''اَسْاَلُكَ تَمَامَ النِّعْمَةِ فِی الْاَشْیَاءِ كُلِّهَا، وَالشُّكْرَ لَكَ عَلَیْهَا حَتّٰی تَرْضٰی وَبَعْدَ الرِّضَا وَالْخَیْرَةَ فِیْ جَمِیْعِ مَا یَكُوْنُ فِیْهِ الْخَیْرَةُ بِجَمِیْعِ مَیْسُوْرِ الْاُمُوْرِ كُلِّهَا لَا بِمَعْسُوْرِهَا یَا كَرِیْمُ''

या'नी ऐ **अल्लाह** पाक ! मैं तुझ से तमाम अश्या में तमामे ने'मत (या'नी जन्नत में दाख़िले और जहन्नम से आज़ादी) का सुवाली हूं और इस पर मुझे अपना शुक्र अदा करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा ह़त्ता कि तू मुझ से राज़ी हो जाए, और ऐ रब्बे

करीम ! मुझे जितने भी भलाई वाले काम हैं उन तमाम की ख़ैर बिग़ैर किसी मुश्किल के आसानी के साथ अ़ता फ़रमा।" (موسوعۃ امام ابن ابی الدنیا، 1/502)

ईमाने कामिल, यक़ीने सादिक़ की दुआ़

❀ आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की दुआ़ में येह कलिमात भी होते थे : "اَللّٰھُمَّ ھَبْ لِیْ اِیْمَانًا وَّیَقِیْنًا وَّمُعَافَاۃً وَّنِیَّۃً" या'नी ऐ **अल्लाह** पाक ! मुझे ईमाने कामिल, यक़ीने सादिक़, तमाम आफ़ातो बलिय्यात से हिफ़ाज़त और सच्ची निय्यत अ़ता फ़रमा।" (موسوعۃ امام ابن ابی الدنیا، 1/21)

रह़मते इलाही का सुवाल

❀ आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ इस त़रह़ भी दुआ़ किया करते थे : "اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْاَلُکَ بِرَحْمَتِکَ الَّتِیْ لَا تَنَالُ مِنْکَ اِلَّا بِالْخُرُوْجِ" या'नी ऐ **अल्लाह** पाक ! मैं तुझ से तेरी उस रह़मत का सुवाल करता हूं जो तू अपनी राह में निकलने वालों को अ़ता फ़रमाता है।" (کنز العمال، 1/285، حدیث:5030)

मुझ पर ह़क़ वाज़ेह़ फ़रमा

❀ आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की दुआ़ओं में से एक दुआ़ येह भी है : "اَللّٰھُمَّ اَرِنِی الْحَقَّ حَقًّا وَّارْزُقْنِیْ اتِّبَاعَہٗ وَاَرِنِی الْبَاطِلَ بَاطِلًا وَّارْزُقْنِیْ اجْتِنَابَہٗ وَلَا تَجْعَلْہُ مُتَشَابِھًا عَلَیَّ فَاَتَّبِعَ الْھَوٰی" या'नी ऐ **अल्लाह** ! मुझ पर ह़क़ को वाज़ेह़ फ़रमा और मुझे उस की इत्तिबाअ़ की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा और बात़िल को मेरे सामने वाज़ेह़ फ़रमा और मुझे उस से बचने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा और उसे मेरे लिये मुश्तबह न बना कि मैं ख़्वाहिशों की पैरवी करने लगूं।" (احیاء العلوم، 5/134)

इस उम्मत का पहला जन्नती

अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जिब्रीले अमीन (عَلَيْهِ السَّلَام) मेरे पास आए और मेरा हाथ पकड़ कर जन्नत का वोह दरवाज़ा दिखाया जिस से मेरी उम्मत जन्नत में दाख़िल होगी । सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह !** मेरी ख़्वाहिश है कि मैं भी उस वक़्त आप के साथ होता, ताकि मैं भी उस दरवाज़े को देख लेता । रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : अबू बक्र ! मेरी उम्मत में सब से पहले जन्नत में दाख़िल होने वाले शख़्स तुम ही होगे। (ابوداؤد، 4/280، حدیث:4652)